1. खुशियाँ बाँटें सारे जग को

सूरज प्रतिदिन निकलता है और इसकी किरणों के धरती पर आते ही सारा जग खुशियों से भर जाता है। प्रकृति के सभी उपकरण हमें कुछ न कुछ देते हैं। क्या? यह कविता पढ़कर जानते हैं।

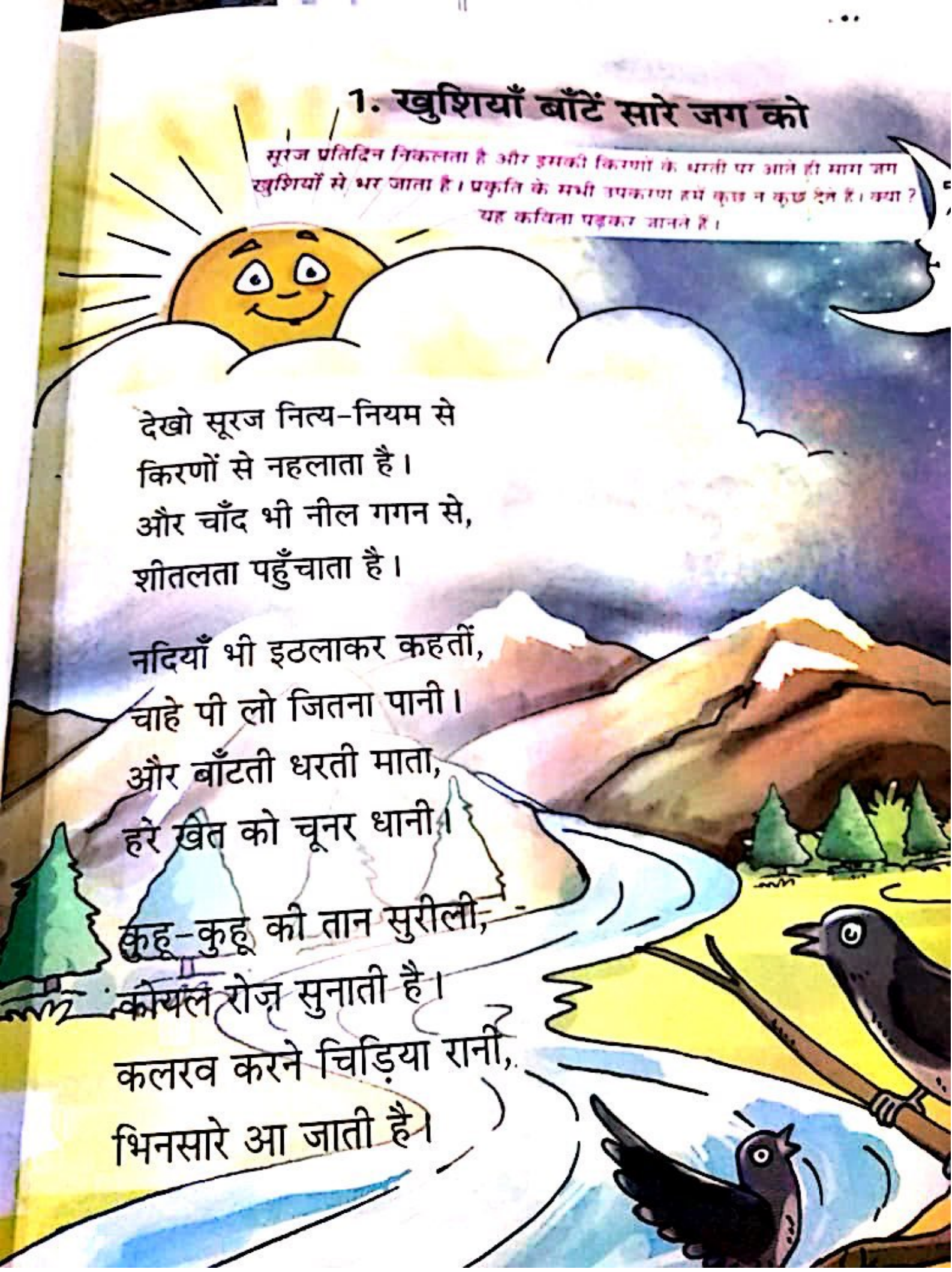

देखो सूरज नित्य-नियम से
किरणों से नहलाता है।
और चाँद भी नील गगन से,
शीतलता पहुँचाता है।

नदियाँ भी इठलाकर कहतीं,
चाहे पी लो जितना पानी।
और बाँटती धरती माता,
हरे खेत को चूनर धानी।

कुहू-कुहू की तान सुरीली,
कोयल रोज़ सुनाती है।
कलरव करने चिड़िया रानी,
भिनसारे आ जाती है।

Scanned with CamScanner

अंधकार को दूर भगाकर,
कर देता दीपक उजियारा।
फूल लुटाकर अपनी खुशबू,
महका देते उपवन सारा।

मीठे फल और छाया देने,
पेड़ सदा झुक जाते हैं।
बादल भी लाकर के पानी,
सबकी प्यास बुझाते हैं।

परोपकार का जीवन इनका
सचमुच बड़ा महान है।
खुशियाँ बाँटें सारे जग को,
वही सच्चा इनसान है।

— *सतीश उपाध्याय*

Scanned with CamScanner

DATE _____

अभ्यास के लिए

शब्द-अर्थ

नित्य	—	प्रतिदिन, हर रोज़	कलरव	—	चिड़ियों का स्वर
शीतलता	—	ठंडक	भिनसारे	—	सुबह-सुबह
इठलाना	—	गर्व दिखलाना	उजियारा	—	उजाला
चूनर	—	चुनरी, आँचल	परोपकार	—	दूसरों का भला
धानी	—	हलका हरा रंग			

Scanned with CamScanner